HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

VIENNA CONGRESS (विएना कांग्रेस)

1815 ई. में वाटरलू के युद्ध में मित्र-राष्ट्रों ने 'क्रांति के पुत्र' नेपोलियन को पराजित कर उसे सेंट हेलेना के निर्जन टापू पर भेज दिया। नेपोलियन के पतन के साथ ही फ्रांस में क्रांति के युग की भी समाप्ति हो गई। नेपोलियन ने अपनी विजयों के द्वारा यूरोप के मानचित्र में जो परिवर्तन कर दिये थे, उसका पुनर्निर्माण करने के लिए आस्ट्रिया की राजधानी विएना में यूरोप के प्रमुख राजनीतिक एकत्र हुए। इस सम्मेलन को 'विएना कांग्रेस' कहा जाता है। इस सम्मेलन के लिए विएना को चुनने का कारण यह था कि यह महाद्वीप के मध्य में था। इसके अतिरिक्त यह नेपोलियन के युद्धों का भी केन्द्र रहा था तथा नेपोलियन की पराजय में आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री मेटरनिख का प्रमुख हाथ रहा था।

विएना कांग्रेस में कुल 90 बड़े महाराजा तथा 63 राजा या उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इसके अतिरिक्त यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित हुए थे। यूरोप के इतिहास में पहली बार इतना विशाल सम्मेलन का आयोजन हुआ। यद्यपि विएना कांग्रेस में विशाल संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, किन्तु चार महाशक्तियों (इंगलैण्ड, रूस, आस्ट्रिया एवं प्रशा) को इस कांग्रेस में विशेष स्थान प्राप्त था तथा इस कांग्रेस के निर्णय भी मुख्यतया इनके प्रतिनिधियों द्वारा ही निर्धारित किए गये थे। विएना कांग्रेस में भाग लेने वाले प्रमुख देश एवं उनके प्रतिनिधि थे- (i) आस्ट्रिया का प्रधानमंत्री (Chancellor) मेटरनिख, (ii) रूस का जार एलेक्जेंडर प्रथम (iii) प्रशा का प्रतिनिधि हार्डेनबर्ग (iv) इंगलैण्ड का विदेशमंत्री कैसलरे तथा (v) फ्रांस का प्रतिनिधि तालीरां।

विएना कांग्रेस के सम्मुख प्रमुख समस्याएं :-

विएना कांग्रेस के सम्मुख निम्नलिखित प्रमुख समस्याएँ थीं :-

(i) शांति की स्थापना :- नेपोलियन के विरुद्ध संघर्ष के समय मित्र राष्ट्रों ने उसे शांति एवं मानवता का शत्रु घोषित किया था। उसके विरुद्ध युद्धों से हुए रक्तपात एवं जनसंकट की सम्पूर्ण जिम्मेवारी नेपोलियन पर ही डाली थी। मित्र राष्ट्रों ने यह घोषणा की थी कि वे अत्याचार एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, अतः नेपोलियन के पतन के पश्चात् जनसाधारण यह अपेक्षा कर रहा था कि विएना कांग्रेस के द्वारा न केवल अन्तर्यूरोपीय शांति की स्थापना की जायेगी, वरन् यह एक शांति एवं सद्भावनापूर्ण विश्व की आधारशिला रखने में भी सफल होगी।

Oxford

→

(iii) पराजित राजाओं को दण्डित करना :- मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध जिन देशों ने नेपोलियन की सहायता की थी, उन्हें किस प्रकार दण्डित किया जाये, यह इसी कांग्रेस के द्वारा निर्धारित किया जाना था।

(iii) यूरोप का पुनर्निर्माण :- नेपोलियन ने अपनी सैनिक विजयों द्वारा यूरोप के मानचित्र को ही बदल दिया था। उसने अनेक राज्यों को विजित कर फ्रांस के अधीन कर दिया था। अतः विएना कांग्रेस के समक्ष यह प्रश्न था कि ऐसे राज्यों का क्या किया जाये तथा यूरोप का पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाये।

(iv) फ्रांस की शक्ति संतुलन पर अंकुश लगाना :- नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों में मित्र राष्ट्रों को अपार जन-धन की हानि को सहना पड़ा था। अतः उनके लिए आवश्यक था कि वे कुछ ऐसी व्यवस्था करें जिससे भविष्य में फ्रांस पुनः अन्य यूरोपीय राज्यों के लिए खतरा न बन सके।

(v) चर्च की समस्या :- विएना कांग्रेस के समक्ष एक धार्मिक समस्या थी। नेपोलियन तथा कुछ अन्य देशों के नेताओं ने गिरजाघरों की भूमि को किसानों को बेच दिया था तथा चर्च को राजकीय संस्था घोषित कर दिया था। इस प्रकार चर्च की सम्पूर्ण सम्पत्ति राज्य के अधीन हो गयी थी। प्रतिक्रियावादी शासक नेपोलियन के पश्चात् चर्च तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं की पुनर्स्थापना करना चाहते थे।

(vi) क्रांति की समस्या :- फ्रांस की क्रांति ने यूरोप को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था। इस क्रांति ने अपने स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व से प्रभावित होकर भावनाओं को विश्वव्यापी बना दिया था। अनेक देशों के लोग इन भावनाओं से प्रभावित होकर अपने-अपने देशों में जनतंत्रात्मक शासन-पद्धति की स्थापना करना चाहते थे। विएना कांग्रेस के प्रतिनिधि प्रमुखतया प्रतिक्रियावादी होने के नाते ऐसा नहीं होने देना चाहते थे। अतः उनके समक्ष यही समस्या थी कि किस प्रकार स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व की भावनाओं को फैलने से रोकें तथा अन्य देशों में क्रांति की सम्भावनाओं को क्षीण करें। इस प्रकार क्रांतिकारी और प्रतिक्रियावादी सिद्धांतों के संघर्ष का फैसला करना विएना कांग्रेस के लिए एक दर्द था।

(vii) विजित प्रदेशों का बटवारा :- नेपोलियन को परास्त करने में मित्रराष्ट्रों ने अत्यधिक संघर्ष किया था तथा अपार जन-धन की हानि को सहा था। अतः इस कांग्रेस में उपस्थित

→

मित्र राष्ट्रों में से प्रत्येक का प्रतिनिधि विजित प्रदेशों में से अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता था। अतः मित्रराष्ट्रों में जीते हुए प्रदेशों को विभाजित भी इसी कांग्रेस में होना था।

विएना कांग्रेस की कार्य-प्रणाली (Working of the Congress)!—

विएना कांग्रेस के कार्य करने की कोई ठोस एवं निश्चित प्रणाली नहीं थी। प्रारम्भ में चार प्रमुख राष्ट्र - इंगलैण्ड, रूस, आस्ट्रिया और प्रशा - अपने हितों को प्राप्त करने के लिए इस कांग्रेस को अपनी इच्छानुसार संचालित करना चाहते थे, किन्तु फ्रांस के प्रतिनिधि तालीरां ने उनकी इस कार्य-पद्धति को चुनौती दी तथा उन्हें आठ राज्यों की समिति बनाने के लिए विवश किया। ये आठ राज्य - इंगलैण्ड, रूस, प्रशा, फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल तथा स्वीडेन थे। जनवरी 1815 ई. में फ्रांस को भी पांचवाँ राज्य मान लिया गया। विशिष्ट समस्याओं पर विचार करने के लिए 10 उपसमितियों की भी घोषणा की गयी। इन समितियों के बन जाने के पश्चात् भी इस कांग्रेस पर पाँच बड़े राज्यों का ही प्रभुत्व बना रहा।

इसके अतिरिक्त इस कांग्रेस में किसी भी विषय पर निर्णय लेने का कोई निश्चित तरीका नहीं था। न कोई प्रस्ताव पारित होते थे और न ही वोट आदि देने जैसी कोई व्यवस्था थी। गोपनीय ढंग तथा बड़ी दावतों में राज्य की सीमाओं का निर्धारण हो जाता था। गम्भीर राजनीतिक समस्याएं संगीत सम्मेलनों में तय हो जाती थीं। इस प्रकार वास्तविक कांग्रेस जिस प्रकार होती है, उसका एक प्रकार से मजाक उड़ाया गया। यही कारण है कि हेज ने इसकी आलोचना करते हुए लिखा है, — "विएना कांग्रेस वास्तव में कोई कांग्रेस नहीं थी।" डा. विमलचंद्र पाण्डेय ने लिखा है कि इसका अर्थ यह हुआ कि इस कांग्रेस में जो निर्णय हुए थे, वे उस कांग्रेस के पूर्व ही गुप्त अथवा खुले रूप से तय कर लिये गये थे। विएना कांग्रेस ने तो केवल पंजीकरण (Registration) का कार्य किया।